* श्रीलक्ष्मीधरभट्टविरचिते *

कृत्यकल्पतरौ

(ब्रह्मचारिकाण्डम्)

सम्पादक

डॉ० जगदीश नारायण दूबे

आचार्य, पी-एच.डी, (पुराणेतिहास), एम. ए. (हिन्दी)
पी. जी. एल. डी., पी-एच. डी. (भाषा-विज्ञान)

If any defect is found in this book please return
the copy by V.P.P. to the Publisher for exchange
free of cost of postage.

प्रकाशक

भारतीय विद्या-अध्ययन केन्द्र
वाराणसी

प्राक्कथन

वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था के अवसान का प्रारम्भ मुगलकाल से होता है। किन्तु जन्मना रूप में आज भी भारत में उपलब्ध है। वस्तुतः जन्मना रूप में अभिधान और परिवेश मात्र ही औपचारिक रह गये हैं। जिसमें गुण-कर्म-ज्ञान और स्वभाव का अभाव ही है। "चातुर्वर्णमयासृष्ट गुण कर्म स्वभावजः" भगवान श्रीकृष्ण को भी यही कहना पड़ा। इससे तथ्य प्रकट होता है कि वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था का शुद्ध उन्नयन उस काल में समाप्त हो चुका था।

इस सन्दर्भ में लक्ष्मीधर भट्ट के "कृत्य-कल्पतरु" का महत्व गहरा हो जाता है जिसने वर्णाश्रम व्यवस्था को सर्वदा प्रकाशमय रखने के लिए इस ग्रंथ का प्रणयन किया। गुरुकुल प्रणाली की आधारशिला ब्रह्मचर्याश्रम पर रखी गयी है। 'कृत्य-कल्पतरु' का ब्रह्मचारी कांड इसलिये और महत्वपूर्ण हो जाता है कि समाज में ब्रह्मचर्य आश्रम की सीमा में अध्ययन कराना शिक्षोन्नति के लिए मूल रूप से आवश्यक है। प्राचीन मूल पाठ के अध्ययनकर्ता लक्ष्मीधरभट्ट के उत्तराधिकारियों का ध्यान भी इस ओर न्यून ही रहा।

समाज से संविधान के रूप में धर्मशास्त्रों को जोड़ना जिससे समाज के जीवन में व्यवहारिकता के लिये प्रमाण प्रस्तुत किया जा सके और प्रशासन में शुद्धाचार के नियम प्रवाहित हो सके, इसकी पूर्ति के लिए 'कृत्य-कल्पतरु' जैसे ग्रन्थ की आवश्यकता थी। स्वर्गीय राय बहादुर मनमोहन चक्रवर्ती नें "बंगाल और मिथिला में स्मृति का इतिहास" लिखकर सर्वप्रथम मार्गदर्शन किया था। इन्होंने १९१५ ई० में लक्ष्मीधर पर एक नोट लिखा जो Journal of the Asiatic Society of Bengal जर्नल ऑफ दि एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल १९१५ ई० में प्रकाशित हुआ।

'कृत्यकल्पतरु' का ब्रह्मचर्यकाण्ड धर्म के विषय में अध्ययन का मार्ग प्रस्तुत करता है। प्रारम्भिक अध्यायों में धर्म के क्षेत्र एवं स्वभाव के विषय में लिखा गया है। इसमें धर्म के लक्षण, विभाजन, प्रकार एवं स्रोत के बारे में दर्शाया गया है। लेखक ने इसके उपरान्त संस्कार की व्याख्या की है। संस्कार, विवाह का जो दूसरे कांड का विषय है, का आभास कराया गया है।

भारत के अन्तिम सम्राट गोविन्दचन्द्र ने लेखक की शैली का मूल्यांकन करते हुए महत्व प्रदान किया। प्रबंधत्व लक्ष्मीधर ने 'काण्डों' से प्रारम्भ किया है। उपकाण्डों के लिये 'पर्व' को अपनाया है। पठन में चयनकर्ता एवं समीक्षा में "साहसशैली महत्व

विषयानुक्रमणिका

प्रार्थना १
राज्ञः प्रशंसा २
ग्रन्थकर्तुः प्रशंसा २
ग्रन्थस्य प्रशंसा ३
ब्रह्मचारिकाण्डोपक्रमश्लोकः प्रतिज्ञा च ४
१—धर्मनिर्णयः— ५
धर्मविशेषाः ६
साधारणो धर्मः १०
फलतो धर्मनिरुपणम् १४
प्रमाणतो धर्मनिरुपणम् २०
पुराणलक्षणम् २९
धर्मल्लक्षणम् ३५
निमित्ततो धर्मानिरुपणम् ४४
२—परिभाषा ५१
३—संस्कारः— ७३
गर्भानवलोभन ८१
पुंसवनावलोभन ८१
सीमन्तोन्नयनम् ८३
सोष्यन्तीकर्म ८४
जातकर्म ८५
नामकरणम् ८८
निष्क्रमणम् ९१
अन्नप्राशनम् ९२
अत्रैव गुणफलानि ९३
चूडाकरणम् ९४
स्त्रीणां संस्काराः ९६
अनुपनीतधर्माः ९६
४—उपनयनम्— १००
आचार्यलक्षणम् १०५

नम्, स्त्रिया सह भोजनम्, पर्युषितभोजनम्, मातुलपितृष्वसृदुहितृपरिणयनमिति। अथोत्तरतः ऊर्णाविक्रयः, सीधुपानमुभयतोदद्भिर्व्यवहारः, आयुधीयता, समुद्रयानमिति। इतरदितरस्मिन् कुर्वन् [दुष्यतीतरदितरस्मिन्]।

तत्र तत्र देशप्रामाण्यमेव स्यात्। मिथ्यैतदिति गौतमः। उभयं त्वैतन्नाद्रियेत। शिष्ट-स्मृति-विरोधदर्शनात्॥

'विप्रतिपत्तिः' धर्मशास्त्रविरुद्धप्रतिपत्तिः। तत्र 'देशप्रामाण्यमेव स्यात्' इति पूर्वपक्षः। शेषं सुगमम्।

अत्र पुराणलक्षणमुच्यते

मत्स्यपुराणे [५३, ६५]

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च[1]।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्॥
'प्रतिसर्गः' संहारः[2]।

विष्णुपुराणे [३, ६, २०–२४]

अष्टादशपुराणानि पुराणज्ञाः प्रचक्षते॥
ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा।
तथान्यं नारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्॥
आग्नेयमष्टमं चैव भविष्यं नवमं स्मृतम्।
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लिङ्गमेकादशं स्मृतम्॥

विष्णुपुराणे-3,6,25

2 कृ.र. -3।